

फ़िलोबस, मस्र के कॉप्टिक पादरी और मशिनरी (2 का भाग 2)

रेटगि:

वविरण:

(2)

श्रेणी: [लेख नए मुसलमानों की कहानियां पुजारी और धार्मिक लोग](#)

द्वारा: Ibrahim Khalil Philobus

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

श्रीमान खलील नाटकीय रूप से समाप्त करते हुए कहते हैं, उसी रात:

"मैंने अपना अंतमि नरिणय ले लिया था। सुबह मैंने अपनी पत्नी से बात की, जिससे मेरे तीन बेटे और एक बेटी है। लेकिन जैसे ही उन्होंने महसूस किया कि मुझे इस्लाम में परिवर्तित होने में दिलचस्पी है, वे रोइ और मशिन के प्रमुख से मदद मांगी। उसका नाम मोन्स्योर शवतिस था जो स्विट्जरलैंड से था। वो बहुत ही चालाक था। जब उसने मुझसे मेरे सच्चे वचिर के बारे में पूछा, तो मैंने उसे खुलकर बताया कि मैं वास्तव में क्या चाहता हूँ और फिर उसने कहा: अपने आप को तब तक नौकरी से दूर रखें जब तक हमें पता न चल जाये कि आपको क्या हुआ है। फिर मैंने कहा: यह रहा मेरी नौकरी का इस्तीफा। उसने मुझे इस फैसले को वापस लेने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन मैं नहीं माना। तब उसने लोगों में यह अफवाह फैला दी कि मैं पागल हो गया हूँ। इस वजह से मुझे एक बहुत ही गंभीर परीक्षा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा जब तक कि मैं अच्छे काम के लिए असवान को छोड़कर काहरि नहीं लौट आया।"

जब उनसे उनके धर्मांतरण की परिस्थितियों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने उत्तर दिया: "काहरि में, मेरा परिचय एक सम्मानित प्रोफेसर से हुआ, जिन्होंने मेरे कठिन परीक्षण से उबरने में मेरी मदद की, और यह उन्होंने मेरी कहानी के बारे में कुछ भी जाने बिना किया। उन्होंने मुझे एक मुसलमान के रूप में माना, क्योंकि मैंने उनसे अपना परिचय इस तरह दिया, हालांकि तब तक मैंने आधिकारिक तौर पर इस्लाम को स्वीकार नहीं किया था। वह डॉ. मुहम्मद अब्दुल मोनीम अल जमाल थे, जो उस समय कोषागार (ट्रेज़री) के सचिव के तहत थे। वह इस्लामी अध्ययन में बहुत रुचिरिखते थे और अमेरिका में प्रकाशति होने के लिए पवित्र कुरआन का अनुवाद करना चाहते थे। उन्होंने मुझसे मदद के लिए कहा

क्योंकि मैं अंग्रेजी जानता था क्योंकि मैंने एक अमेरिकी विश्वविद्यालय से एमए किया था। वह यह भी जानते थे कि मैं कुरआन, तौरात और बाइबल के तुलनात्मक अध्ययन की तैयारी कर रहा था। हमने इस तुलनात्मक अध्ययन और कुरआन के अनुवाद में एक साथ काम किया।

जब डॉ. जमाल को पता चला कि मैंने असवान की नौकरी से इस्तीफा दे दिया है और मैं बेरोजगार हूँ तो उन्होंने काहिरा में स्टैंडर्ड स्टेशनरी कंपनी में नौकरी दिलाने में मेरी मदद की। तो कुछ समय बाद मैं आर्थिक रूप से अच्छी तरह स्थिर हो गया। मैंने अपनी पत्नी को इस्लाम में परिवर्तित होने के अपने इरादे के बारे में नहीं बताया, इसलिए उसने सोचा कि मैं यह बात भूल गया हूँ और यह एक क्षणिक संकट से ज्यादा कुछ नहीं था। लेकिन मैं अच्छी तरह से जानता था कि औपचारिक रूप से इस्लाम में परिवर्तित होने के लिए मुझे एक लंबी जटिल प्रक्रिया से गुजरना होगा, और यह वास्तव में एक ऐसी लड़ाई थी जिसे मैं कुछ समय के लिए स्थगित करना चाहूँगा जब तक कि मैं ठीक नहीं हो जाता और अपनी तुलनात्मक पढ़ाई पूरी नहीं कर लेता।"

फरि श्रीमान खलील ने आगे कहा:

"मैंने 1955 में अपनी पढ़ाई पूरी की और मेरी आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई। मैंने कंपनी से इस्तीफा दे दिया और स्टेशनरी और स्कूल के सामान आयात करने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यालय स्थापित किया। यह एक सफल व्यवसाय था जिससे मैंने अपनी आवश्यकता से बहुत अधिक धन कमाया। इस प्रकार मैंने इस्लाम में अपना आधिकारिक रूपांतरण घोषित करने का फैसला किया। 25 दिसंबर 1959 को, मैंने मसिर में अमेरिकी मशिन के प्रमुख डॉ. थॉम्पसन को एक तार भेजकर सूचित किया कि मैंने इस्लाम धर्म अपना लिया है। जब मैंने डॉ. जमाल को अपनी असली कहानी सुनाई, तो वह पूरी तरह से हैरान रह गए। जब मैंने इस्लाम अपनाने की घोषणा की, तो नई मुसीबत शुरू हो गई। मशिन के मेरे सात पूर्व सहयोगियों ने मुझे घोषणा रद्द करने के लिए मनाने की पूरी कोशिश की, लेकिन मैंने मना कर दिया। उन्होंने मुझे मेरी पत्नी से अलग करने की धमकी दी और मैंने कहा: वह अपनी मर्जी की मालिक है। उन्होंने मुझे जान से मारने की धमकी दी। लेकिन जब उन्होंने देखा कि मैं नहीं मानने वाला, तो उन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया और मेरे एक पुराने दोस्त को मेरे पास भेजा, जो मशिन में मेरा सहयोगी भी था। वो मेरे सामने खूब रोया। इसलिए मैंने उसके सामने कुरआन का नमिन्लखित छंद पढ़ा:

"तथा जब वे (ईसाई) उस (कुरआन) को सुनते हैं, जो दूत पर उतरा है, तो आप देखते हैं कि उनका आँखें आँसू से उबल रही हैं, उस सत्य के कारण, जैसे उन्होंने पहचान लिया है। वे कहते हैं, हे हमारे पालनहार! हम विश्वास करते हैं, अतः हमें (सत्य) के साथियों में लिख ले। (तथा कहते हैं) क्या कारण है कि हम ईश्वर पर तथा इस सत्य (कुरआन) पर विश्वास न करें? और हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमें सदाचारियों में सम्मिलित कर देगा। (कुरआन 5:83-84)

मैंने उससे कहा:

""तुम्हें क़ुरआन सुनकर ईश्वर के सामने रोना चाहिए था और उस सच्चाई पर विश्वास करना चाहिए था ज़ैसे आप जानते हैं लेकिन आप मानते नहीं हैं। वह उठा और चला गया क्योंकि उसे लगा अब कोई फायदा नहीं है। मैंने जनवरी 1960 में आधिकारिक रूप से इस्लाम धर्म अपना लिया।"

श्रीमान खलील से तब उनकी पत्नी और बच्चों के रवैये के बारे में पूछा गया और उन्होंने जवाब दिया:

"उस समय मेरी पत्नी ने मुझे छोड़ दिया और हमारे घर का सारा फर्नीचर अपने साथ ले गई। लेकिन मेरे सभी बच्चे मेरे साथ जुड़ गए और इस्लाम कबूल कर लिया। उनमें से सबसे उत्साही मेरा सबसे बड़ा बेटा इसाक था जिसने अपना नाम बदलकर उस्मान कर लिया, फिर मेरा दूसरा बेटा जोसेफ और मेरा बेटा सैमुअल, जिसका नाम जमाल है और बेटी मजीदा जिसका नाम अब नजवा है। उस्मान अब दर्शनशास्त्र के अध्यापक हैं जो पेरिस में सोरबोन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं और प्राच्य (ओरिएंटल) अध्ययन और मनोवैज्ञान पढ़ाते हैं। वह 'ले मोंडे' पत्रिका में भी लिखते हैं। मेरी पत्नी ने छह साल के लिए घर छोड़ दिया और 1966 में इस शर्त पर लौटी की वो अपना धर्म का पालन करेगी। मैंने इसे इसलिए स्वीकार किया क्योंकि इस्लाम में धर्म की कोई बाध्यता नहीं है। मैंने उससे कहा: मैं नहीं चाहता कि तुम मेरी खातिर मुसलमान बनो, बल्कि जब तुम खुद आश्वस्त हो जाओ तब मुसलमान बनना। वह अब महसूस करती है कि वह इस्लाम में विश्वास करती थी लेकिन वह अपने परिवार के डर से यह घोषित नहीं करती थी, लेकिन हम उसे एक मुस्लिम महिला मानते हैं, और वह रमजान में उपवास करती है क्योंकि मेरे सभी बच्चे प्रार्थना करते हैं और उपवास करते हैं। मेरी बेटी नजवा कॉमर्स फैकल्टी की छात्रा है, जोसेफ मेडिकल डॉक्टर है और जमाल इंजीनियर है।

इस समय के दौरान, यानी 1961 से लेकर आज तक, मैं इस्लाम और इसके खिलाफ मशिनरियों और प्राच्यवादियों के तरीकों पर कई कतिबे प्रकाशित कर चुका हूँ। अब मैं इस्लाम में महिलाओं की स्थिति को उजागर करने के उद्देश्य से तीन ईश्वरीय धर्मों में महिलाओं के बारे में तुलनात्मक अध्ययन कर रहा हूँ। 1973 में, मैंने हज (मक्का की तीर्थयात्रा) की और मैं इस्लाम फैलाने का काम कर रहा हूँ। मैं विश्वविद्यालयों और धर्मार्थ समितियों में सेमिनार आयोजित करता हूँ। मुझे 1974 में सूडान से नमिंत्रण मिला जहाँ मैंने कई सेमिनार आयोजित किए। मेरा समय पूरी तरह से इस्लाम की सेवा में लगा हुआ है।"

अंत में श्रीमान खलील से इस्लाम की मुख्य विशेषताओं के बारे में पूछा गया जिसने उनका ध्यान सबसे अधिक खींचा। और उन्होंने उत्तर दिया:

"इस्लाम में मेरा विश्वास पवित्र क़ुरआन और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) की जीवनी पढ़ने से आया है। मैं अब इस्लाम के खिलाफ गलत धारणाओं में विश्वास नहीं करता, और मैं विशेष रूप से ईश्वर के एक होने की अवधारणा से आकर्षित हूँ, जो इस्लाम की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। ईश्वर एक ही है। उनके जैसा कोई नहीं है। यह विश्वास मुझे केवल ईश्वर का दास बनाता है और किसी का नहीं। ईश्वर के एक होने की भावना मनुष्य को किसी भी मनुष्य की दासता से मुक्त करती है और यही सच्ची स्वतंत्रता है।

मुझे इस्लाम में क़्षमा का नियम और ईश्वर और उसके बंदों के बीच सीधा संबंध भी बहुत पसंद है।

"आप कह दें मेरे उन भक्तों से, जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किये हैं कि तुम नरिाश न हो ईश्वर की दया से। वास्तव में, ईश्वर क़्षमा कर देता है सब पापों को। नश्चय वह अतकि्षमाशील, दयावान् है। तथा झुक पड़ो अपने पालनहार की ओर और आज्ञाकारी हो जाओ उसके, इससे पूर्व कि तुमपर यातना आ जाये, फरि तुम्हारी सहायता न की जाये। (क़ुरआन 39: 53-54)

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/106>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।